CLASS 10TH

HINDI

पाठ - 2

साना-साना हाथ जोड़ि

[मधु कांकरिया]

CRASH COURSE

जीवन-परिचय

मधु कांकरिया हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिका हैं। मधु जी के लेखन का मुख्य क्षेत्र गद्य है। मधु जी के उपन्यास और कहानियाँ बहुचर्चित हैं। कथेतर के क्षेत्र में मधु जी बहुत सुन्दर यात्रा-वृत्त लिखे हैं। इनकी रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता तथा समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएँ जैसे संस्कृति, महानगर की घुटन और असुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे की आदत, लालबत्ती इलाकों की पीड़ा तथा नारी अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं के विषय रहे हैं।

मधु कांकरिया (1957)

साना-साना हाथ जोड़ि

साना साना हाथ जोड़ि की लेखिका मधु कांकरिया जी ने अपने यात्रा वृतांत के बारे में इसमें बताया है। यह यात्रा सिक्किम की राजधानी गंगटोक और यूथनांक के बीच थी। लेखिका जब इस शहर में उतरी वह हैरान हो गई। उनका हैरान होने का कारण सितारों की झिलमिलाहट में जगमगाता इतिहास और वर्तमान के संधि स्थल पर खड़ा मेहनतकश बादशाहों का शहर गंतोक की सुंदरता थी। इस सुंदरता ने लेखिका के मन में भीतर-बाहर शून्य स्थापित कर दिया था। उन्होंने इस यात्रा के दौरान एक नेपाली युवती से प्रार्थना के बोल "साना-साना हाथ जोड़ि गर्दहु प्रार्थना" सीखें जिसका अर्थ था छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूं कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो। लेखिका ने अगले दिन यूथनांक जाने का निश्चय किया था । जैसे प्रातःकाल में उनकी नींद खुली वह बालकनी की ओर दौड़ी क्योंकि वहां के लोगों ने उन्हें बताया था कि मौसम साफ होने पर कंचनजंघा साफ दिखाई देती है।

साना-साना हाथ जोड़ि

कंचनजंगा तू ना दिखे परंतु इतने सारे फूल देखे कि वह लिखती हैं “मानो ऐसा लगा कि फूलों के बाग में आ गई हूं।” यूथनांक जोकि गंगटोक से 149 किलोमीटर की दूरी पर था वहां जाने के लिए ड्राइवर कम गाइड जितेन नार्गे के साथ निकलती हैं। लेखिका जब आ रही थी तब उन्हें गदराए पाईन, नुकीले पेड़, पहाड़ दिखे इसके साथ ही दिखी सफेद बौद्ध पताकाएं जोकि शांति व अहिंसा के प्रतीक होती हैं और बुध की मान्यता के अनुसार जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तब 108 श्वेत पताकाएं लहराई जाती है जिन पर मंत्र लिखे होते हैं। कई बार नए कार्य के प्रारंभ में भी पताकाएं फहरा दी जाती है परंतु वह रंगीन होती है। अब गाइड नार्गे के साथ लेखिका की जीप उस जगह पहुंची जहां गाइड फिल्म की शूटिंग हुई थी यह की जगह- कवी लॉन्ग स्टॉक। उन्हीं रास्तों के भीतर लेखिका मधु जी की एक कुटिया की तरफ नजर पड़ी जहां उन्होंने धर्म चक्र को घूमते देखा।

साना-साना हाथ जोड़ि

इस प्रेयर व्हील के बारे में नार्वे ने बताया कि इसको घुमाने से पाप धुल जाते हैं ऐसा माना जाता है। अब पर्वतों, घाटियों, नदियों की सुंदरता से आगे बढ़कर लेखिका ने फेन उगलता झरना देखा जिसका नाम- सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल था। लेखिका लिखती है- पहली बार एहसास हुआ.... जीवन का आनंद है यही चलायमान सौंदर्य। वहां उन्होंने पहाड़ तोड़ती तथा बच्चे को पीठ पर बांधकर पत्ते बीनती महिलाओं को देखा। वापस लौटते समय भी जीप में नॉर्वे ने कई जानकारियां दी। उसने गुरु नानक के फुटप्रिंट और खेदुम एक पवित्र स्थल के बारे में बताया। तभी लेखिका ने कहा गंगटोक बहुत सुंदर है तब नार्गे ने कहा मैडम गंतोक कहिए जिसका अर्थ पहाड़ होता है।

पाठ का सार

मधु कांकरिया द्वारा लिखा गया पाठ 'साना-साना हाथ जोड़ी' एक यात्रा वृत्तांत है। इसमें लेखिका ने सिक्किम की राजधानी गंगटोक और उसके आगे हिमालय की यात्रा का वर्णन किया है। यह यात्रा शहरों की भागम-भाग भरी ज़िंदगी से दूर होती है।

इस पाठ में लेखिका को कई तरह की अनुभूतियां होती हैं:

लेखिका को घुटने तक बर्फ से ढकी ज़मीन, बीच-बीच में बनते प्रपात, और चांदी की तरह चमकती तिस्ता नदी की पतली धारा दिखाई देती है। प्रियता और रूडोडंड्रो के साथ विभिन्न फूलों और बादलों से ढकी घाटियां भी दिखाई देती हैं। ध्वनि में उसे आत्मा का संगीत सुनाई देने लगता है। आत्मकेंद्रित होने पर लेखिका को सत्य और सौंदर्य की अनुभूति होने लगती है। झरने की गर्जना में उसे जीवन की हलचल दिखाई देती है। उसका मन काव्यमय हो उठा। प्रकृति की अलौकिक घटना को देखकर लेखिका सोचती है कि एक पल में ही ब्रह्माण्ड में सब कुछ कैसे घटित हो रहा है।

पाठ का सार

इस पाठ में प्रदूषण के बारे में भी बताया गया है। इसमें हमें सिक्किम के लोगों की कठिनाइयों के बारे में भी पता चलता है। लेखिका महानगरों को 'डार्करूम' क्यों कहती हैं क्योंकि वहाँ की जीवनशैली और माहौल बहुत अधिक तनावपूर्ण और अधिक अनियंत्रित होती है। लोग इन महानगरों के डार्करूम से भागने के लिए शांति और स्वास्थ्य की खोज करते हैं।

Most Important Question

1. प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है?

उत्तर

लेखिका प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर एकदम मौन, किसी ऋषि की तरह शांत होकर वह सारे परिदृश्य को अपने भीतर समेट लेना चाहती थी। वह रोमांचित थी, पुलकित थी।

उसे आदिम युग की अभिशप्त राजकुमारी -सी नीचे बिखरे भारी-भरकम पत्थरों पर झरने के संगीत के साथ आत्मा का संगीत सुनने जैसा आभास हो रहीं था। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे देश और काल की सरहदों से दूर बहती धारा बन बहने लगी हो। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गई हों। उसका मन हुआ कि अनंत समय तक ऐसे ही बहती रहे और इस झरने की पुकार सुनती रहे। प्रकृति के इस सौंदर्य को देखकर लेखिका को पहली बार अहसास हुआ कि यही चलायमान सौंदर्य जीवन का आनंद है।

Most Important Question

2. प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौन से दृश्य झकझोर गए?

उत्तर

प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को सड़क बनाने के लिए पत्थर तोड़ती, सुंदर कोमलांगी पहाड़ी औरतों का दृश्य झकझोर गया। उसने देखा कि उस अद्‌वितीय सौंदर्य से निरपेक्ष कुछ पहाडी औरतें पत्थरों पर बैठी पत्थर तोड़ रही थीं। उनके हाथों में कुदाल और हथौड़े थे और कइयों की पीठ पर डोको (बड़ी टोकरी) में उनके बच्चे भी बँधे थे। यह विचार उसके मन को बार-बार झकझोर रहीं था कि नदी, फूलों, वादियों और झरनों के ऐसे स्वर्गिक सौंदर्य के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिजीविषा के बीच जंग जारी है।

Most Important Question

3. कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उत्तर

श्वेत पताकाएँ किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर फहराई जाती हैं। किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शांति के लिए नगर से बाहर किसी वीरान स्थान पर मंत्र लिखी एक सौ आठ पताकाएँ फहराई जाती हैं, जिन्हें उतारा नहीं जाता। वे धीरे-धीरे अपने-आप नष्ट हो जाती हैं।
किसी शुभ कार्य को आरंभ करने पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

Most Important Question

4. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर

लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्म-चक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है। मैदानी क्षेत्रों में गंगा के विषय में भी ऐसी ही धारणा है। उसे लगा कि पूरे भारत की आत्मा एक-सी है। सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद उनकी आस्थाएँ, विश्वास, अंध-विश्वास और पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक-सी हैं।

Most Important Question

5. सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख करें।

उत्तर

सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में निम्न लोगों का योगदान , सराहनीय होता है

1. वे सरकारी लोग जो व्यवस्था में संलग्न होते हैं।
2. वहाँ के स्थानीय गाइड जो उस क्षेत्र की सर्वथा जानकारी रखते हैं।
3. वहाँ के स्थानीय लोग जो सैलानियों के साथ रुचि से बातें करते हैं।
4. वे सहयोगी यात्री जो यात्रा में मस्ती भरा माहौल बनाए रखते हैं और कभी निराश नहीं होते हैं। उत्साह से भरपूर होते हैं।

Previous Year Question

1. यात्राएँ विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होने का अच्छा माध्यम हैं। 'साना-साना हाथ जोड़ि' यात्रा वृत्तान्त के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर

इतिहास गवाह है कि सभी यात्राएँ संस्कृतियों के परिचित होने का अच्छा माध्यम रहा है। पाठ के आधार पर भी यह बात स्पष्ट होती है यात्राओं से हम वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ भाषा, रीति-रिवाज, परम्पराओं, मान्यताओं से भी परिचित होते हैं। हम दूर बैठकर किसी स्थान की संस्कृति का अनुभव नहीं कर सकते। संस्कृतियों का आदान-प्रदान इसकी अहम भूमिका निभाते हैं। पहाड़ी बच्चों को स्कूल जाने के साथ-साथ माँ-बाप का हाथ बंटाते देखा।

Previous Year Question

2. 'साना-साना हाथ जोड़ि' के आधार पर गंगटोक के मार्ग के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए जिसे देखकर लेखिका को अनुभव हुआ "जीवन का आनंद है यही चलायमान सौन्दर्य। "

उत्तर

उत्तर-लेखिका ने धीरे-धीरे धुंध की चादर हटते हुए देखा तो आश्चर्यचकित रह गई। सब ओर जन्नत बिखरी हुई पड़ी थी। नज़रों के छोर तक खूबसूरती फैली दिखाई दे रही थी। पर्वत फूलों की घाटियाँ, पर्वत, वादियों के दुर्लभ नजारे, प्रवाहमान झरने, नीचे वेग से बहती तिस्ता नदी, ऊपर मँडराते आवारा बादल सब कुछ घटित होते दिखाई दे रहे थे। इन दुर्लभ नजारों ने लेखिका को मोहित कर रखा था। हवा में हिलोरे लेते प्रियुता और डोर्डेडो के फूल प्रकृति में खुशबू बिखेर रहे थे। इन सबके साथ सतत प्रवाह में बहता लेखिका का वजूद उसे यह एहसास करा रहा था कि "जीवन का आनंद है-यही चलायमान सौंदर्य। "

Previous Year Question

3. बार्डर एरिया में छावनी पर 'वी गिव अवर टुडे फॉर योर टुमारो' को पढ़कर लेखिका का मन उदास क्यों हो गया? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर

छावनी क्षेत्र में लगे उस बोर्ड को देखकर लेखिका का मन उदास हो गया। उनके भीतर कुछ पिघलने लगा। वे सोचने लगीं कि महानगर में रहते हुए हमें कभी ध्यान ही नहीं आता कि जिन बर्फीले इलाकों में तापमान माइनस से बहुत नीचे चला जाता है और पेट्रोल के अलावा सब- कुछ जम जाता है, हम पाँच मिनट में ही काँपने लगते हैं वहाँ हमारे जवान कड़कड़ाती सर्दी में सभी विषमताओं का सामना करते हुए देश की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं। इसी प्रकार शरीर को तपा देने वाली गर्मियों के दिनों में भी झुलसते रेगिस्तान में रहते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं । सेना के ये प्रहरी अपने परिवारों से दूर रहकर देश की सीमाओं पर दिन-रात जागकर पहरा देते हैं ताकि हम लोग चैन की नींद सो सकें। देश और देशवासियों की सुरक्षा के लिए सैनिकों द्वारा अपने सुख-चैन की कुर्बानी देना सचमुच सराहनीय है।

Previous Year Question

4. 'साना-माना हाथ जोड़ि' पाठ में जितेन ने पहाड़ी स्कूली बच्चों के बारे में क्या-क्या बताया? आपकी दिनचर्या इन बच्चों से कितनी भिन्न है? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर

जितेन ने बताया कि हर दिन तीन-साढ़े तीन किलोमीटर की पहाड़ी चढ़कर यह बच्चे स्कूल जाते हैं। नीचे तराई में केवल एक ही स्कूल है। दूर-दूर से बच्चे उसी स्कूल में पढ़ने आते हैं। इनमें से अधिकांश बच्चे शाम के समय अपनी माँओं के साथ मवेशियों को चराते हैं, पानी भरते हैं तथा जंगल से लकड़ियों के भारी-भारी गट्ठर ढ़ोते हैं। हमारी दिनचर्या इससे भिन्न है। मैदानी क्षेत्रों के बच्चे अपने घर के आसपास के स्कूलों में पैदल, स्कूल बसों अथवा आवागमन के अन्य माध्यमों से शिक्षा ग्रहण करने जाते हैं। आवश्यकता पड़ने पर हम अपने घर के छोटे-मोटे कामों में माता-पिता का हाथ बंटाते हैं।

Previous Year Question

5. 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ में आई पंक्ति-'इन पत्थरों को तोड़ती पहाड़िनों के हाथों में पड़े ठाठे, एक ही कहानी कह रहे थे' के माध्यम से लेखिका क्या कहना चाहती है? उन श्रम-सुंदरियों के जीवन के बारे में अपने विचार भी लिखिए।

उत्तर

पहाड़ी मार्ग पर पत्थर तोड़ती सुंदरियों को देखकर कही गई इस पंक्ति के माध्यम से लेखिका कहना चाहती है कि आम जिंदगियों की कहानी हर जगह एक सी है। समाज का एक बड़ा वर्ग अभाव, यातना, दैन्य और वंचना का जीवन जीते हुए कठोर परिश्रम कर रहा है जबकि समाज का एक सीमित विशेष वर्ग सुख-सुविधाओं का लाभ उठा रहा है। लेखिका सोचने लगीं कि ये श्रम सुंदरियाँ कितना कम पारिश्रमिक लेकर समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं। कई औरतों की पीठ पर बँधे डोको में उनके बच्चे भी बँधे थे। सचमुच ये श्रम सुंदरियाँ मातृत्व एवं श्रम साधना जैसी कठिन जिम्मेदारियों को साथ-साथ निभाती हुई देश की प्रगति में योगदान दे रही हैं। हमें उनके परिश्रम का उचित मूल्यांकन करना चाहिए।

Previous Year Question

6. प्रदूषण के कारण प्रकृति का रूठना किन रूपों में दिखाई पड़ रहा है, और प्रदूषण से बचने के लिए आपकी क्या भूमिका हो सकती है? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के संदर्भ में उत्तर लिखिए।

उत्तर

बढ़ते प्रदूषण के कारण स्नोफॉल कम हो रहा है। अंटार्कटिका की बर्फ निरंतर पिघलने से समुद्र का जल स्तर बढ़ता जा रहा है। धरती की सीमाएँ डूबने लगी हैं। नदियों में जल कम और प्रदूषित हो गया है, जिससे जलीय जंतुओं का जीवन खतरे में पड़ गया है। वृक्षों के निरंतर कटाव से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और ऑक्सीजन का संतुलन बिगड़ गया है। जिससे मौसम चक्र प्रभावित हो रहा है, पैदावार घट रही है, प्राकृतिक आपदाओं ने जोर पकड़ लिया है और मानव के स्वास्थ्य पर इसका बहुत गलत प्रभाव पड़ रहा है। इसे रोकने के लिए यह आवश्यक है कि हम वृक्षों को न काटें तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें।

Previous Year Question

वाहनों का प्रयोग कम से कम करें। पॉलिथीन अपशिष्ट पदार्थ तथा नालियों के गंदे पानी को नदियों में न जाने दें। भूमि संरक्षण हेतु कीटनाशक पदार्थों और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम से कम करें। पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहन दें।

Previous Year Question

7. 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि प्राकृतिक जल संचय की व्यवस्था को कैसे सुधारा जा सकता है? इस दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर

प्रकृति द्वारा हिम शिखरों के रूप में जल संचय की अद्भुत व्यवस्था की गई है किन्तु 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ में स्नोफॉल की कमी का उल्लेख है। अतः हम सब का कर्तव्य है कि वर्षा के जल का संग्रहण करें। अधिक वृक्षारोपण, जल का अपव्यय और पाइपों का रिसाव रोककर जल संरक्षण किया जा रहा है। सरकार द्वारा जल संरक्षण हेतु भूमिगत बाँधों का निर्माण, छोटे-बड़े पोखरों और तालाबों का निर्माण, मनरेगा योजना, नदियों के बाढ़ क्षेत्र को मोड़ना तथा कृषकों को वर्षा के जल के सही उपयोग की जानकारी देना आदि प्रयास शामिल हैं किन्तु नागरिकों के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं होगा।

Previous Year Question

8. 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर बताइए कि पहाड़ के सौंदर्य पर मंत्रमुग्ध लेखिका पहाड़ों पर किस दृश्य को देख क्षुब्ध और परेशान हो उठती है? क्या आपने भ्रमण या पर्यटन के दौरान ऐसे दृश्य देखे हैं? ऐसे दृश्यों और अपने मन पर पड़े उनके प्रभाव को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर

लेखिका हिमालय यात्रा के दौरान प्राकृतिक सौंदर्य के आलौकिक आनंद में डूबी हुई थी परंतु अकस्मात् वहाँ के जनजीवन ने उन्हें झकझोर दिया। वहाँ कुछ पहाड़ी औरतें जो मार्ग बनाने के लिए पत्थरों पर बैठकर पत्थर तोड़ रही थीं। उनके आटे सी कोमल काया पर हाथों में कुदाल व हथौड़े थे। कईयों की पीठ पर बच्चे भी बँधे हुए थे। इनको देखकर लेखिका को बहुत दुख हुआ कि ये हम सैलानियों के भ्रमण के लिए हिमालय की इन दुर्गम घाटियों में मार्ग बनाने का कार्य कर रही हैं।

Previous Year Question

इनके लिए यह भोजन मात्र पाने का साधन है और हमारे जैसे सैलानियों के लिए मनोरंजन का। दूसरी बार जब लेखिका ने देखा कि सात-आठ साल के पहाड़ी बच्चों को रोज तीन-साढ़े तीन किलोमीटर का सफर तय कर स्कूल पढ़ने जाना पड़ता है। स्कूल के पश्चात् वे बच्चे मवेशियों को चराते हैं तथा लकड़ियों के गट्ठर भी ढोते हैं तो उस प्राकृतिक सौंदर्य के बीच भूख, दैन्य और जिंदा रहने की लड़ाई को देखकर लेखिका का मन क्षुब्ध और परेशान हो गया।

(अपने भ्रमण के दौरान के अनुभव छात्र स्वयं लिखेंगे)

Previous Year Question

9. 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि प्राकृतिक जल संचय की व्यवस्था को कैसे सुधारा जा सकता है? इस दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर

प्रकृति द्वारा हिम शिखरों के रूप में जल संचय की अद्भुत व्यवस्था की गई है किन्तु 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ में स्नोफॉल की कमी का उल्लेख है। अतः हम सब का कर्तव्य है कि वर्षा के जल का संग्रहण करें। अधिक वृक्षारोपण, जल का अपव्यय और पाइपों का रिसाव रोककर जल संरक्षण किया जा रहा है। सरकार द्वारा जल संरक्षण हेतु भूमिगत बाँधों का निर्माण, छोटे-बड़े पोखरों और तालाबों का निर्माण, मनरेगा योजना, नदियों के बाढ़ क्षेत्र को मोड़ना तथा कृषकों को वर्षा के जल के सही उपयोग की जानकारी देना आदि प्रयास शामिल हैं किन्तु नागरिकों के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं होगा।

STAY CONNECTED
KEEP LEARNING

TOGETHER WE CAN, WE WILL

THANK YOU !

Join our telegram channel

Nexttoppersofficial